ऑनरेरी मजिस्ट्रेट

(प्रहसन)

लेखक

श्रीयुत सुदर्शन

प्रकाशक

सरस्वती प्रेस, बनारस

अन्त मे मुझे यह स्पष्टया लिखना है कि इस पुस्तक के तैयार करने का अभिप्राय किसी का अपमान करना नहीं, बल्कि सभ्य-समाज के सामने हास्य-विनोद की सामग्री रखना है।

इस नाटक के सभी पात्र कल्पित हैं।

राम-कुटिया,
लाहौर
२६-११-२६

सुदर्शन

ऑनरेरी मजिस्ट्रेट

पहला दृश्य

स्थान—लाहौर में गंडूशाह के घर का आँगन

समय—प्रात आठ बजे

[गंडूशाह चारपाई पर बैठे हिसाब-किताब करते जाते हैं और हुक्का [illegible] । सामने उनकी स्त्री भामो चटाई पर लेटी है और मालिन [illegible] सिर से कंकड़ दाल चुन चुनकर निकाल रही है। थोड़ी दूर पर बैठा [illegible] गन्ना चूस रहा है।]

(बाहर से आवाज)

गंडूशाह ! ए गंडूशाह जी।

गंडूशाह—

(सिर उठाकर) अरी मालिन !

मालिन—

(दाल निकालना बंद करके) हाँ शाह जी !

गंडूशाह—

(हुक्के का दम लगाकर) ज़रा देखो तो, बाहर कौन बुला रहा है? (फिर हिसाब में लग जाते हैं।)

मालिन—

[illegible] होगा। रुपया लेने आया होगा। उसकी लड़की का ब्याह [illegible]। जा [illegible] देख। (फिर दाल चुनने लगती है।

गड्डूशाह—

मालिन ! अरी देखना कौन है ? (ऊँची आवाज से) आया। (फिर हिसाब में लग जाते हैं।)

मालिन—

देखो तो, बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है। इतना नहीं होता कि उठकर दरवज्जे तक हो आये। (जाती है।)

हरिया—

हुकम चढा देती है, हुकम चढा देती है। बडी आई है महारानी कही की।

शामो—

और तू कौन-से मोती पड़ो रहा है ? उठकर चला जाता, तो क्या गजब हो जाता ? वह तो फिड़ भी कुछ कड़ ही रही थी।

हरिया—

दिन-रात काम करते-करते मेरी कमर टूट जाती है। फिर भी आप नराज ही रहती हैं।

शामो—

बड़ा काम करता है तू। बता तो, आज पड़भात से तूने क्या-क्या किया है ? बोल।

हरिया—

भाजी लाया, पानी भरा, दरजी के पास गया, लालाजी के लिए तमाखू लाया। अब कुछ कमर सीधी कर रहा हूँ।

शामो—

यही बड़ा काम है ?

मालिन घबराई हुई आती है।)

शामो—

कौन है, मालिन, कौन है ?

मालिन—

चड़फाँसी है मांजी ! (हाँफती।)

शामो—

(घबराहट से उछलकर) क्या कहा चपरासी है?

गट्टूशाह—

(बही छोड़कर) क्या है? मालिन! तुझे क्या हुआ? (हुक्का पीते हैं।)

मालिन—

बाहर चपरासी खड़ा है! चपरासी

(गट्टूशाह घबराकर खड़े हो जाते हैं, हुक्का उलट जाता है।

गट्टूशाह—

चपरासी है?

मालिन—

हाँ लालाजी! चपरासी है।

गट्टूशाह—

हमने कोई चोरी की है, डाका मारा है, किसी की हत्या करी है? हमारे घर चपरासी क्यों आया है?

शामो—

(रोते हुए) राम जाने, अब क्या हो जायगा। मेरी आँख फड़क रही थी। पता नहीं, चपरासी क्यों आया है? सीतला माई, तेरा ही आसरा है। दुर्गा माई तेरा ही सहारा है।

गट्टूशाह—

पर यह चपरासी आया क्यों है, हैं?

हरिया—

(गन्ना चूसकर) चपरासी नहीं होगा।

गट्टूशाह—

हरिया, तेरा क्या ख्याल है?

हरिया—

यह चपरासी नहीं होगा।

शामो—

तेरे मुँह में घी-शक्कर। उठकर जरा देख तो सही, कौन है?

गड्डूशाह—

जा भई, देख। मेरा तो हिरदा धड़क रहा है। (शामो से) जड़ा देख, धक-धक कर रहा है न ? (ठंडी साँस लेता है।)

हरिया—

(चुटकी बजाकर) मैं अभी आया। (दुपट्टा सँभालता हुआ जाता है।)

गड्डूशाह—

मालिन !

मालिन—

हाँ शाहजी !

गड्डूशाह—

चडफाँसी था ? सचमुच चड़फाँसी था ?

मालिन—

हाँ लालाजी ! चडफाँसी ही था। कोई मैं इतनी अनजान तो नहीं हूँ।

गड्डूशाह—

अच्छी तड़े से देखा था ?

मालिन—

अच्छी तडे से। मैं तो पसीना-पसीना हो गई थी।

गड्डूशाह—

हे महावीड ! अब तो तेरी ही आसा है।

शामो—

(ठंडी साँस लेकर) सीतला माई ! तू ही रच्छा कर। हमारे घड़ में तो आज तक चड़फाँसी नहीं आया।

(हरिया दौड़ता हुआ आता है।)

गड्डूशाह—

हड़िया ! कौन है ?

हरिया—

(हाँफ हाँफकर) लालाजी ! वही है। बस वही है।

गड्डूशाह—

कौन ?

हरिया—

मेरा भी यही ख्याल है।

गड्डूशाह—

तू जाकर कह दे, लालाजी घड़ पर नहीं हैं। जा तो। खड़े-खड़े मुँह क्या ताकता है?

शामो—

सुनता नहीं, जाकर कह दे, लालाजी घड मे नहीं हैं।

(चपरासी का सहसा प्रवेश)

गड्डूशाह—

चड़फांसी! जी आ गये।

(शामो, मालिन और हरिया, सबका भागना)

चपरासी—

लाला गड्डूशाहजी आपही हैं?

गड्डूशाह—

फड्डी साहब के चडफांसीजी! बन्दगी।

चपरासी—

बन्दगी, महाराज! बन्दगी।

गड्डूशाह—

(धोती की खूँट से एक रुपया निकालकर) चड़फांसी जी!

चपरासी—

महाराज!

गड्डूशाह—

(रुपया देकर) यह आपके सरबत-पानी के लिए है।

चपरासी—

आपकी किरपा चाहिए। (रुपया ले लेता है।)

गड्डूशाह—

चड़फांसीजी!

चपरासी—

[illegible] साहब।

गड्डूशाह—

चड़फाँसी जी। मैं अभी स्यापा शुरू करवा देता हूँ। सारे शहर में शोर मच जायगा कि गड्डूशाह मड़ गया है। फड्डूशाह को भी मालूम हो जायेगा, कि गड्डूशाह मड़ गया है।

चपरासी—

(सोचकर) नहीं महाराज, यह भी मुसकिल है। आप जरा तो आवें। कोई खौफ की बात नहीं। आप तसल्ली रखें।

गड्डूशाह—

फड्डूशाह के चडफाँसीजी! मुझे बचा लो। मैं आपको एक ओर रुपया देता हूँ। तुम जाकर इतना कह दो कि गड्डूशाह मड़ गया है। (रुपया निकालकर दिखाता है।)

चपरासी—

शाहजी! (लालायित दृष्टि से रुपये की तरफ देखते हुए) यह मुसकिल है।

गड्डूशाह—

मगड मैंने अपराध क्या किया है? (रुपया फिर धोती में बाँध लेता है।)

चपरासी—

गड्डूशाह आपही हैं न?

गड्डूशाह—

नहीं चड़फाँसीजी! मैं तो गड्डूमल हूँ।

चपरासी—

और आपही बडे अमीर हैं ना?

गड्डूशाह—

कौन कहता है हम बडे अमीर हैं? हम तो फकत एक वगत रोटी खाते हैं, चडफाँसीजी! वेसक किसी से पूछ लें। हम तो बड़े गडीब आदमी हैं।

चपरासी—

नहीं महाराज आप ही गड्डूशाह हैं।

गड्डूशाह—

चपरासीजी! इस मुहल्ले में अमीर तो एक झड्डूशाह हैं। कहीं आप गलती तो नहीं कर रहे हैं। फड़ङ्गी साब ने झड्डूशाह को बुलाया होगा। क्यों!

चपरासी—

हाँ झड्डूशाह को भी बुलाया है साहब ने। मगर आपको भी बुलाया है।

गड्डूशाह—

बुलाया है, तो झड्डूशाह को भी (कुछ धीरज धरकर) तो कोई हरज नहीं। वह नुक्कड़वाला घर है। चलकर आवाज दो।

चपरासी—

तो आप भी तैयार हो जायँ। मैं उनको बुलाता हूँ।

गड्डूशाह—

बहुत अच्छा चपरासीजी, बहुत अच्छा। आप चलें मगर यह ख्याल रखना कि मैं बड़ा गरीब आदमी हूँ। हम कभी गम का खाते हैं, कभी भूखे रहते हैं। हाँ, फक़त झड्डूशाह अमीर आदमी हैं हमारे इस मुहल्ले में।

[चपरासी का जाना, और शामो, मालिन और हरिया का बाहर आना]

शामो—

[illegible] बना होगा? (रोती है, और नाक साफ़ करती है।)

गड्डूशाह—

[illegible] हरज नहीं, झड्डूशाह को भी तो बुलाया है फड़ङ्गी ने। तुम रोती [illegible]!

शामो—

[illegible] इसलिए है कि यह तुम पर इलजाम किसने लगा दिया है!

हरिया—

[illegible] दुश्मन का काम है।

गड्डूशाह—

[illegible] मैं पहले ही समझता था, किसी दुसमन का काम है। (हरिया [illegible]।

हरिया—

हाँ शाह जी।

गड्डूशाह—

तुम एक काम कडो, रानी* को तो जड़ा बुला लाओ भाग कर।

हरिया—

लो, वह आप ही आ गई है। कहिए क्या आज्ञा है?

—लेखक

(नाइन का प्रवेश)

गड्डूशाह—

रानी!

नाइन—

(छोटा-सा घूँघट निकालकर) हाँ लालाजी!

गड्डूशाह—

तुम हमाड़ी जड़ा मदद कड़ो।

नाइन—

क्या लालाजी!

गड्डूशाह—

हमाड़ी असबाब एक दिन के लिए अपने घड़ में रख लो। बस इतनी ही बात है।

नाइन—

मगर क्यों? मामला क्या है?

शामो—

मामला यह है कि किसी ने इलतजाम लगा दिया है हम पर। फड़गी साहब का चड़फाँसी आया हुआ है।

नाइन—

(घबराकर) हैं! चड़फाँसी आया है।

---

* पंजाब में नाई को राजा और नाइन को रानी बोलते हैं।

शामो—

नौकरी बात नहीं। लालाजी ने सरबत-पानी के लिए उसे एक रुपया दे दिया है।

नाइन—

देखना लाला! हम पर कोई आफत न आ जाये!

गड्डशाह—

नहीं नहीं मजाल है। रानी, तुम्हारा हक हम नहीं रखेंगे। (हरिया से) हरिया!

नहीं रानी! मजाल है, तुम पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। तुम्हें कोई कुछ नहीं कर सकता। क्या हम मर गये हैं? तुम जरा फिकर न करो। (हरिया से) ओ हरिया!

हरिया—

हाँ लालाजी!

गड्डशाह—

सारा असबाब उठा उठाकर रानी के घर पहुँचा दो। शाम तक सब खाली हो जाय। तलाशी होगी—तलाशी। और जो चीज रह जायेगी, ... हो जायेगी।

नाइन—

लालाजी! . ।

गड्डशाह—

तुम कुछ फिकर न करो। रानी! मजाल है।

(डरते-डरते साफा गले में डालकर चले जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

स्थान—झंडूशाह के मकान का एक कमरा

समय—दिन के नौ बजे

[झंडूशाह बैठे खिचड़ी खा रहे हैं। उनकी स्त्री रामदेवी सामने बैठी पङ्खा कर रही है। दोनों बातें कर रहे हैं।]

झडूशाह—

बरकत की माँ! दही कितने का मँगवाया था तुमने? (खिचड़ी खाते हैं।)

रामदेवी—

(पङ्खा करते हुए) दो पैसे का।

झडूशाह—

तुम मेड़ा दिवाला निकाल दोगी? (खाते हैं।)

रामदेवी—

क्यों? क्या अब यह भी कोई फजूलखड़ची है?

झडूशाह—

(एक घूँट पानी पीकर) क्या नहीं? इस तड़े तो हम उजड़ जायँगे। एक पैसे का मँगवाया करो। एक पैसा बहुत होता है।

रामदेवी—

अच्छा, अब एक ही पैसे का मँगवाया करूँगी।

झडूशाह—

(डकार लेकर) बरकत की माँ!

रामदेवी—

हाँ बरकत के लाला!

झडूशाह—

थोड़ी-सी खिचड़ी डाल देना और। बड़ी मजेदाड़ बनी है

रामदेवी—

(खिचड़ी देकर) अब मेरी नथ बनकर आवेगी ?

झड़ूशाह—

आ जायगी। (मुँह भरा हुआ है।)

रामदेवी—

रामो की तो बन कर पुरानी भी हो गई, और आप अभी 'आ जायगी, आ जायगी' ही कह रहे हैं।

झड़ूशाह—

वह अमीर है।

रामदेवी—

और, हम गरीब हैं !

झड़ूशाह—

उनके सामने तो गरीब ही हैं।

रामदेवी—

बस, बस। जब कुछ माँगो, उस वखत गरीब बन जाते हैं। यह बहाना खूब मिला है। .... लो (गाल पर हाथ रखकर), खिचड़ी में घी डालना तो भूल ही गई।

झड़ूशाह—

यही तो था, कोई हर्ज नहीं। तुम्हें नथ का ख्याल रहता है, और सब काम भूल जाती हो।

(हरदेवी का प्रवेश)

हरदेवी—

माता ! रामो !

रामदेवी—

क्यों हरो ! मैं हरकत के बाप को रोटी खिला रही हूँ। क्या काम है !

हरदेवी—

हमारे दरवाजे पर चपरासी खड़ा है।

रामदेवी—

(खड़ी होकर) चड़फाँसी आये तुम्हारे घड़। चड़फाँसी आये तुम्हारे बाप के घड़। हमने कोई चोड़ी की है ? जुआ खेला है ? डाका माड़ा है ? हमारे घड़ चड़फाँसी क्यों आये ?

हरदेवी—

लड़ती क्यों हो ? बाहड़ निकलकर देख लो कि मैंने सच कहा है या झूठ कहा है ?

झड्डूशाह—

(खिचड़ी छोड़कर) देखो तो (रामदेवी का बाहर जाना और पिछले पाँवों लौटना)

झड्डूशाह—

क्यों, क्या है ? बोलो।

रामदेवी—

सचमुच चड़फाँसी है। चड़फाँसी !

झड्डूशाह—

चड़फाँसी ? क्या पेटीवाला चड़फाँसी ?

रामदेवी—

हट जाओ, मुझे लेट जाने दो। मेरा दिल घबड़ा रहा है। बरकत की माँ ! (ठण्डी साँस भरकर) बरकत की माँ ! मेरा दिल घड़बा रहा है।

रामदेवी—

(रोकर) हौसला करो।

झड्डूशाह—

मेरा दिल घड़बा रहा है, हौसला क्या करूँ।

हरदेवी—

मगड़ इसमें क्या होगा ? हौसला करो, और पूछो, मामला क्या है ?

झड्डूशाह—

मगड़ मेरा दिल घड़बा रहा है, मेरा दिल घड़बा रहा है।

रामदेवी—

—क मगराऊँ ? (ठण्डी साँस भरकर) देवीमाता, तेरा ही आसरा है। माताजी तेरा ही आसरा है।

[भड़ुशाह लेटकर साँस रोक लेते हैं। रामदेवी चिल्लाने लग जाती है। सहसा गड्डूशाह अन्दर जाते हैं।]

गड्डूशाह—

होसला करो, लालाजी ! होसला करो। चलो, चलकर पूछते हैं कि हमने क्या किया है ? फड़गी साहब कोई खा जायगा हमें ? चलो।

भड्डूशाह—

शाहजी ! तुम मेरे साथ चलोगे ?

गड्डूशाह—

चलूँगा क्यों नहीं। चलो, चलते हैं।

भड्डूशाह—

तुम भी चलोगे ? तुम्हारी बड़ी मेहरबानगी होगी।

गड्डूशाह—

बड़ी मेहरबानगी कैसी ? मुझे भी बुलाया है फड़ङ्गीसाब ने। चड़फाँसी मेरे घर भी गया था अभी अभी।

भड्डूशाह—

यह बात है, तो फिकर क्या है ?

गड्डूशाह—

चलो चलें। देखें, क्या करता है फड़ङ्गी साब। क्या हमें खा जायेगा। हम भी लालेन्दि हैं।

भड्डूशाह—

चलो। (रुककर) बरकत की माँ !

रामदेवी—

(देहरी के अन्दर से) हाँ।

भड्डूशाह—

फिकर न करना फिकर क्या है !

रामदेवी—

जड़ा नड़मी से बातचीत करना। जोड़ जोड़ से न बोलना।

झड़ूशाह—

तुम फिकड़ मत करो। मेरे साथ लाला गड़ूशाह भी तो हैं। (जाने के लिए तैयार होते हैं।)

रामदेवी—

जड़ा ठहर जाओ, सगन लेकर जाओ।

गड़ूशाह—

बड़ी विद्यावान है।

रामदेवी—

पूरनदेवी! ओ पूरनदेवी!!

पूरनदेवी—

हाँ, भाभी!

रामदेवी—

पानी का लोटा लेकर आगे खड़ी हो जा जड़ा।

पूरनदेवी—

इसमें कुछ डालेंगे?

रामदेवी—

हाँ, डालेंगे। (शंकरदास अन्दर आता है।)

शंकरदास—

ड़ाम-ड़ाम, शाहजी! ड़ाम-ड़ाम!

झड़ूशाह—

भई! बचकर आ गये, तो डाम-ड़ाम भी हो जायगी! अभी तो फँस गये हैं। ड़ाम-डाम क्या करें?

शंकरदास—

क्यों, क्या बात है? आप कुछ घड़बाए हुए हैं।

हरदेवी—

आज हमारे घड़ चड़फाँसी आया है।

मकरदास—

राम-राम कहीं चड़फाँसी मुझे न देख ले। गड़ीब का खून हो जायगा। सरकार माफ करना। पर क्या करें, समा नाजक है। आप तो जानते ही हैं कि हम आपके तावेदाड़ हैं। पर क्या करें समा नाजक है। इसलिए (जाने को मुड़कर) राम-राम।

(चले जाना)

गडूशाह—

भड़ूशाह!

भड़ूशाह—

हाँ भई गडूशाह!

गडूशाह—

तुमने सुना समा नाजक है?

भड़ूशाह—

हाँ भई! न चड़फाँसी हमारे घड़ आता, न यह बातें सुनते। अगर इधर आ गये, तो (ठण्डी साँस भरकर) शुकर करेंगे अभी तो फँसे हुए हैं!

गडूशाह—

होसला करो, भड़ूशाहजी! होसला करो मजाल है। कोई हमने खून किया है, डाका किया है। पाड्डी साहब से चलकर पूछते हैं। फिकड़ क्या है!

भड़ूशाह—

(घबराहट को छिपाकर) नहीं, फिकड़ क्या है, फिकड़ क्या है! ([illegible]) परन्तु एक बात है, गडूशाह! इस चड़फाँसी को देखकर मेरा दिल [illegible] जाता है, हाथ-पाँव फूल जाते हैं। जमदूत लगता है, जमदूत।

गडूशाह—

लोप तो हमें भी लगता है। मगड—

भड़ूशाह—

[illegible] क्या!

गडूशाह—

[illegible] न करो। कोई हड्ज नहीं (ऊँची आवाज से) पूरनदेवी दर- [illegible] नहीं?

रामदेवी—

(घूँघट के अन्दर से) हाँ, आई है।

झड़ूशाह—

तो आओ, चलें।

गड़ूशाह—

चलो झड़ूशाह! कहीं फड़ङ्गी साहब का चड़फाँसी गुस्सा न हो जाय। महावीड़! तेरा ही आसड़ा है। (दोनों जाते हैं।)

———

तीसरा दृश्य

स्थान—कचहरी में डिप्टी कमिश्नर का कमरा

[डिप्टी कमिश्नर के सामने कागजों का ढेर लगा है और वह देख-देखकर उन पर [illegible] करता जाता है। एक ओर रीडर बैठा है। दरवाजे पर अरदली खड़ा है। एकाएक डिप्टी कमिश्नर सिर उठाता है।]

डिप्टी कमिश्नर—

वेल रीडर !

रीडर—

हुजूर !

डिप्टी कमिश्नर—

यह हुमारा लोग टाइम का कोई परवा नहीं करटा। इटना डेर होगया। [illegible] लोग अभी टक नहीं आया।

रीडर—

हुजूर ठीक फरमाते हैं। हम लोगों में यह बहुत बड़ा ऐब है।

डिप्टी कमिश्नर—

आस्ते आस्ते टीक हो जायगा।

रीडर—

ठीक है हुजूर जनाब का ख्याल बिलकुल ठीक है।

डिप्टी कमिश्नर—

[illegible] तालीम बढ़ता जाएगा, यह ऐब दूर होटा जाएगा।

रीडर—

हुजूर ठीक है। हमें अभी तालीम की बहुत जरूरत है।

डिप्टी कमिश्नर—

[illegible] !

अरदली—

(दौड़कर) हुजूर !

डिप्टी कमिश्नर—

सब-जज हसडीन को हमारा सलाम बोलो।

अरदली—

बहुत अच्छा, हुजूर। (अरदली जाता है।)

रीडर—

हुजर, हाजरी आगई है।

डिप्टी कमिश्नर—

वैल, अभी सब-जज आटा है।

रीडर—

वह इन्तजार करेंगे। इतने में हुजूर हाजरी खा लेंगे। टाइम होगया है। और आप टाइम के पाबन्द हैं।

डिप्टी कमिश्नर—

हम चाहटा है, आप लोग भी टाइम का इसी तरह पान्द हो।

रीडर—

हुजूर की मेहरबानी से सब ठीक हो जाएगा।

(डिप्टी कमिश्नर दूसरे कमरे में चला जाता है। सब जज हसनदीन का प्रवेश।)

रीडर—

(खड़े होकर) सलाम हुजूर !

सलाम। (इधर उधर देखकर) साहब कहाँ हैं ?

रीडर—

हाज़री खाने गये हैं।

हसनदीन—

(कुरसी पर बैठकर) मेरी तलबी क्यों हुई है ?

रीडर—

साहब बहादुर ने सैदमिट्ठा बाजार के दो रईसों को बुलवाया है। उनको आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाने का इरादा है। मगर दोनों बिलकुल अनपढ़ हैं। ता बात करने की भी तमीज नहीं।

साहब—

मिस्टर हसनदीन ! How do you do ? (हसनदीन ! आपका (दौरा सा है ?)

हसनदीन—

सब-उठकर और सिगरेट फेंककर) How do you do Sir (जनाब ,आज कैसा है ?)

साहब—

(कुरसी पर बैठकर) वैल रीडर, वह लोग आये ?

रीडर—

हाँ हुजूर, बाहर खड़े हैं । बुला लूँ ?

साहब—

Yes (हाँ ! बुला लो ।)

(रीडर बाहर जाता है, और थोड़ी देर बाद गड्डूशाह और झड्डूशाह का साथ लेकर वापस आता है । झंडूशाह और गड्डूशाह दोनों झुककर सलाम करते हैं, और दरवाजे के पास ज़मीन पर बैठ जाते हैं । दोनों के चेहरों पर घबराहट के चिह्न दिखाई दे रहे हैं । हसनदीन और रीडर हँसते हैं, परन्तु हँसी रोकते हैं ।)

साहब—

नहीं नहीं सेठ साहब ! आगे आ जाओ, चौकी पर बैठो !

गड्डूशाह—

नहीं साहब ! हम यहीं अच्छे हैं । रहकाइ की बड़ाबड़ी करना क्या ठीक है ?

झड्डूशाह—

(हाथ जोड़कर) पड़गी साहब ! आपकी मेहरबानगी । हम यहीं अच्छे हैं ।

साहब—

नो नो, आगे आ जाओ, चौकी पर बैठो । वह जगह अच्छा नहीं है, आगे आ जाओ । जल्दी करो—Make haste

झड्डूशाह—

चलो, फिर क्या किया जाय ? जैसी हाकम की मड़जी वैसी हमाड़ी मड़जी। हम तो हुकम के गुलाम हैं।

गड्डूशाह—

क्या बात कही है तुमने—हम हुकम के गुलाम हैं।

(दोनों जूते उतारकर डरते-डरते साहब के पास जाकर बैठ जाते हैं।)

साहब—

हम आपको देखकर वहोट खुश हुआ।

झड्डूशाह—

बहुत अच्छा, फड़गी महड़ाज बहुत अच्छा। आपकी खुसी ही चाहिए।

साहब—

आप अच्छी तरे वैठ जायें।

गड्डूशाह—

फड़गी महड़ाज ! हम तो चड़फासी को देखकर डर गये थे। हमने क्या अकसीर की है ? गड़ीब लाहौड़िए हैं, हम तो किसी से लड़ते-झगड़ते भी नहीं। हम तो किसी को गाली भी नहीं देते ॥

साहब—

टुम वहोट Wealthy है, अमीर आदमी है।

गड्डूशाह—

अमीड ? अमीड कौन है, हम तो बड़े ही गड़ीब लाहौड़िये हैं। बेशक तलाशी ले लें, बेसक चड़फासी से पूछ लें।

साहब—

क्या वोलने माँगटा है टुम लोग ?

झड्डूशाह—

(धीरे से) गड्डूशाह ! मुझको क्यों फँसाता है। अपनी तलाशी करा, मेरी तलाशी क्यों कराता है।

गड्डूशाह—

मज़ाल है। (ऊँचे स्वर से) फड़गी साहब ! हम सच कहते हैं, हम दोनों अमीड़ नहीं हैं, हम दोनों बड़े गड़ीब हैं।

शाहूशाह—

([illegible] उतारकर और साहब के पाँव मे रखकर) फड़गी साहब ! [illegible] गरीब है। हमने क्या कुसूर किया है ? हम गड़ीब, हमाड़ा बाप [illegible] दादा गरीब।

(इमनदीन और रीडर हँसते हैं।)

साहब—

([illegible] से) Well, I can't understand Aren't they the right persons ? (मुझे कुछ पता नहीं लगता, क्या यह वही रईस नहीं हैं ?)

इमनदीन—

Yes they are (हाँ, यह वही हैं)

साहब—

But what do they say ? (परन्तु यह क्या कह रहे हैं ?

इमनदीन—

वखत खाना भी नसीब नहीं होता। किसी ने गलत इलतजाम लगा दिया है। मैं बिलकुल गड़ीब आदमी हूँ। वेसक चड़फाँसी से भी पूछ लो।

साहब—

वैल, क्या बोलने माँगटा ? (हसनदीन से) बाबू !

हसनदीन—

(दोनों साहूकारों से) सुनो, साहब ने तुम्हें कोई सजा देने के लिए नहीं बुलाया। समझे ?

झड़ूशाह—

हाँ, तो चड़फाँसी क्यों गया था हमारे घड़। हम पर बड़ी जबरजस्ती हुई है। हमारी तो सहर भर में सोहरत हो गई है। हमारी [illegible] लग जाँयगी। हमारी वेइज्जती खड़ाब हो गई हैं।

गड्डूशाह—

फड़गी साहब ने हमको क्यों बुलाया है ? हमने तो कोई तकसीर नहीं की ?

हसनदीन—

साहब बहादुर तुमको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाना चाहते हैं। समझे ?

गड्डूशाह—

झड़ूशाह !

झड़ूशाह—

हाँ भाई गड्डूशाह !

गड्डूशाह—

कुछ समझे ?

झड़ूशाह—

हाँ, साहब हमें 'कमसलेट' का ठेका देना चाहते हैं।

गड्डूशाह—

झट्टूशाह—

मान लो। चार पैसे की कमाई हो जाएगी। कमसलेट में नुकसान नहीं होता।

हसनदीन—

नहीं नहीं, कमसरियेट का ठेका नहीं, साहब तुम्हें डिप्टी बनाना चाहते हैं। क्यों मंजूर है? समझे डिप्टी!

गट्टूशाह—

भाई डिप्टी तो जाने को कहते हैं।

झट्टूशाह—

(सिर हिलाकर) हमको मंजूर नहीं। गट्टूशाह को मंजूर हो, तो हो, हमको तो बिलकुल मंजूर नहीं। क्या गट्टूशाह?

गट्टूशाह—

हमें भी मंजूर नहीं।

हसनदीन—

नहीं नहीं मामला समझो। साहब बहादुर तुम्हें डिप्टी बनावेंगे। तुम कचहरी किया करोगे। तुम मुकदमे सुना करोगे। तुम लोगों को सजाएँ दिया करोगे। समझे?

गट्टूशाह—

गड्डूशाह—

झड्डूशाह !

झड्डूशाह—

हाँ भई गड्डूशाह !

गड्डूशाह—

सुना ?

झड्डूशाह—

तो क्या हम बहरे हैं ?

हसनदीन—

समझे ?

झड्डूशाह—

तो क्या हम बेवकूफ हैं ?

गड्डूशाह—

मगर यह जरीमाना किस कुसूर पर है ? हमने क्या पाप किया है ? (साहब से) फड़गी साहब ! (हाथ जोड़कर) ए फड़गी साहब जी। हम गरीब लाहौडिए हैं, हम पर मेहरबानगी की जाय। कोई खता तो हमने नहीं की। यह मुफ़्त की सजा क्यों ?

हसनदीन—

तुम दोनों गलती पर हो। समझे ? गवर्नमेंट की मेहरबानी है कि वह तुम लोगों पर खुश हुई है। इसी लिए यह इज्जत तुमको बख्शी गई है। शहर में तुम्हारी इज्जत बढ़ जायगी, लोग तुम्हें सलाम करेंगे। तुमको क़ैद और जुर्माना करने के इख्तियारात हासिल होंगे। क्या यह मामूली बात है ? लोगों में यह रुतबा बड़ा बुलंद है। तुमको खुश होना चाहिए। समझे ?

गड्डूशाह—

(आधी बात समझकर) अच्छा तो बना है, पर [illegible]। क्यों झड्डूशाह, तुम्हारा क्या ख्याल है ?

झड्डूशाह—

[illegible]ने को लड़का[illegible] देगी, फिकर क्या करते हो तुम ?

झड़ूशाह—

मन्नाल है, मनाल है।

साहब—

अब आप लोग जा सकटा है। सलाम।

झड़ूशाह—

परमेंसर आपको पटवाड़ी बना दे। थानेदार बना दे।

(साहब और हसनदीन का जाना)

गड़ूशाह—

झड़ूशाह! फडगियों की सगडाद* कब होगी?

झड़ूशाह—

क्यो फडगी साहब के मुनीमजी! फड़गियो की सगडाद* कब होगी?

रीडर—

(हँसकर) फरगियो की सगरात क्या?

झड़ूशाह—

तुम फड़गियों की सगड़ाद नहीं समझते?

गड़ूशाह—

(अभिमान से सिर ऊँचा करके) गड़ेजी-महीने की पहली तारीख। समझे? अब बोलो।

रीडर—

(हिसाब करके) आज से पंद्रहवे दिन।

गड़ूशाह—

तो उसी दिन से हम कचहड़ी करेंगे?

रीडर—

हाँ शाहजी! उसी दिन से।

गड़ूशाह—

झड़ूशाह!

---

* हिंदुओं में पहली तारीख को संक्रात कहते हैं। गड़ूशाह अंग्रेजी महीने की पहली तारीख को अंगरेजों की संक्रात कहता है।

चपरासी—

मुझे देखकर इनकी जान निकल गई थी। कहते थे, किसी तरह पीछा छुड़वाओ। मगर अब तो ख़ुश हो गये हैं। आपको फिरंगी का मुनीम कहते हैं।

रीडर—

और तुम्हें चढ़फाँसी। (हँसकर) क्या उमदा नाम दिया है तुम्हें!

चपरासी—

और मुझे देखकर सहम गये थे, जैसे किसी ने गोली मार दी हो। औरतें चिल्लाने लगीं, जैसे तबाही आ गई हो। मुहल्ले-भर में शोर मच गया था।

रीडर—

चार दिन बाद यह मुक़दमों का फ़ैसला करेंगे!

चपरासी—

सरकार की मरज़ी है। जिस पर निहाल हो जाय, उसका नसीबा खुल जाता है। चार दिन बाद यही बड़े बड़ों से बढ़ जायँगे। (साहब की ओर देखकर) हुजुर!

रीडर—

क्यों, क्या है?

चपरासी—

(हँसी के मारे लोट-पोट होकर) देखिए, दोनों मिठाईवाले से भाग रहे हैं। कह रहे हैं, मिठाई कम देगा तो क़ैद कर लेंगे।

रीडर—

(देखकर) इसमें शक ही क्या है, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मुकर्रर हुए हैं— जो चाहें, कर दें।

(परदा।)

गड्डूशाह—

हम कचहड़ी कर भी सकेंगे या नहीं ? मुझे तो सक होता है इसमें ।

झड्डूशाह—

हौसला करो शाहजी ! हौसला करो । भला यह भी कोई मुशकिल काम है । कचहड़ी करना तो इतना आसान है (मुँह फुलाकर) जितना मिनड़ी खाना ।

गड्डूशाह—

मगर कैसे शाह जी ?

झड्डूशाह—

सुनो ! मुकदमे आवेंगे । किसी को कैद कर दिया, किसी को छोड़ दिया । दरखास्ते पेस होंगी, किसी पर अँगूठा लगा दिया, किसी पर न लगाया । यही तो कचहड़ी है । यही तो कचहड़ी का काम है ।

गड्डूशाह—

मगर यह आपने सीखा कहाँ से ?

झड्डूशाह—

मेरी बहन के सुसर के मामू का लड़का कचहड़ी में है । ये बात उसने मुझे समझा दी हैं । मैं आपको समझा दूँगा । फिकड़ क्या है ? हौसला करो ।

गड्डूशाह—

(शान्ती की साँस लेकर, मानों मौत के मुँह से निकला हो, एकाएक साहस के साथ) मजाल है, मजाल है ।

(एक स्त्री पास से गुज़रती है ।)

गड्डूशाह—

झड्डूशाह !

झड्डूशाह—

हाँ भई गड्डूशाह !

गड्डूशाह—

चली गई है ।

गडूशाह—

हम डिप्टी हैं। फड्गी साहब के चपरासी ने कहा था। फड्गी साहब के मुनीम ने कहा था। फड्गी साहब ने आप कहा था। (हरिया से) तुम जाकर उसे पकड़ लाओ। वह सलाम नहीं कर गई। उसे सलाम करके जाने देंगे। हम डिप्टी साब हैं।

हरिया—

जैसी आपकी मर्जी। मगर है यह जबरजस्ती।

(जाता है।)

गडूशाह—

झडूशाह !

झडूशाह—

हाँ भई गडूशाह !

गडूशाह—

हड़िया डरता है, खौफ खाता है, घबराता है।

झडूशाह—

बेवकूफ आदमी है। समझा देना। कहीं ऐसा न हो कि खौफ से काम ही बिगाड़ दे। उसे मालूम होना चाहिए कि उसका लाला अब डिप्टी हो गया है।

गडूशाह—

मजाल है। मजाल है।

(एक बाबू का पास से गुजरना)

झडूशाह—

ओ आदमी! ओ भाई! ओ बाबू!

गडूशाह—

ओ जानेवाले! ठहरो! ओ भाई, कहाँ जाता है? इधर आ, इधर आ। (बाबू का ठहरना)

बाबू—

क्यों, क्या बात है? चीखते क्यों हो?

गट्टूशाह—

हम चीखते हैं—हम ! हम—जो डिप्टी हैं ! तुम हमें जानते हो कि नहीं ! हम डिप्टी हैं। (टहलकर) सुना, हम डिप्टी हैं (थोड़ी देर के बाद) दोनों डिप्टी हैं। कल से कचहरी करेंगे। हम डिप्टी हैं, वह और मैं, दोनों डिप्टी हैं।

बाबू—

तो मैं क्या करूँ ?

गट्टूशाह—

अहाहा !

झट्टूशाह—

हाँ भाई गट्टूशाह !

गट्टूशाह—

सुनते हो पूछता है, मैं क्या करूँ ? (जोर से हँसकर) हहह ! पूछता है, मैं क्या करूँ ! बेवकूफ है, पागल है।

झट्टूशाह—

(बाबू से) इन्हें सलाम करो, सलाम।

बाबू—

मगर क्यों सलाम करूँ ?

गट्टूशाह—

क्योंकि हम डिप्टी हैं। सुना, हम डिप्टी हैं, डिप्टी।

बाबू—

हुआ करो, मुझे इससे क्या मतलब है ?

झट्टूशाह—

हम जुर्माना कर देंगे, जुर्माना।

गट्टूशाह—

नहीं जी, मैं इसे कैद कर दूँगा। जुर्माना तो इसके लिए कुछ भी नहीं, कैद करूँगा।

([illegible] का आना। उसकी माँ पीछे पीछे घूँघट निकाले सहमी हुई [illegible] है)

बाबू—

(हरिया से) तू कौन है ?

हरिया—

(डरकर) मैं इनका नौकर हूँ।

बाबू

मगर तू इसको क्यों साथ लाया है, हरामजादे, बदमाश, लुच्चे।

(क्रोध से कोट की बाहें चढ़ाता है।)

गड्डूशाह—

(डरकर) झड्डूशाह !

झड्डूशाह—

(सहमकर) हाँ भई गड्डूशाह !

गड्डूशाह—

काम तो खराब हो गया ! अब क्या करें ?

हरिया—

(काँपते हुए) मुझे इन्होंने आज्ञा दी थी ?

बाबू—

(गड्डूशाह और झड्डूशाह की ओर देखकर) यह आज्ञा आपकी है ! (दोनों चुप रहते हैं) मैं पूछता हूँ, यह आज्ञा आपकी है ? बताओ तो, आप में डिप्टी कौन है ? (ठहरकर) मैं उसे सलाम करूँगा।

गड्डूशाह—

(जल्दी से) मैं।

झड्डूशाह—

और मैं भी।

बाबू—

झड़ूशाह—

(आगे बढ़कर) सलाम, फटझी साहब के आदमी जी हमारा भी सलाम।

बाबू—

अगर तुमने फिर ऐसी हरकत की, तो याद रखना, मैं

(क्रोध से आगे बढ़ता है। दोनों मजिस्ट्रेट डरकर भागते हैं; और गंडूशाह के मकान में घुसकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते हैं। हरिया गली के कोने में छिप जाता है। बाबू अपनी स्त्री के साथ बड़बड़ाता उधर चला जाता है।)

गोपालदास—

चुप, यही हमारे नये मालिक हैं। (झड्डूशाह और गड्डूशाह के सामने झुककर) सलाम, हुजूर।

झड्डूशाह—

सलाम, फड़गी साहब के आदम जी!

चपरासी—

(झुककर) सलाम, हुजूर!

गड्डूशाह—

सलाम महाराज, सलाम! (कपड़ा झाड़कर) आप भी फ[illegible]गी सा[illegible] के आदमी हैं?

गोपालदास—

आप अंदर तशरीफ़ ले चलें। हम आपके नोकर हैं। यह आपका कमरा है।

गड्डूशाह—

(उछलकर) तुम हमारे नौकर हो—दोनों नौकर हो?

दोनों—

'हाँ, हुजूर, हम दोनों आपके नौकर हैं।

झड्डूशाह—

(सिर हिलाकर) यह नहीं हो सकता। क्यों गड्डूशाह?

गड्डूशाह—

हाँ भई झड्डूशाह।

झड्डूशाह—

यह कैसे हो सकता है? हमारा नया नया काम है। अभी से दो दो नौकर रखने की क्या जरूरत? जब काम चल निकलेगा, तो देखा जायगा। इस वक्त हम नहीं रखते। (ठहरकर) चले जाओ, हम आप ही [illegible] कर लेंगे।

हुजूर, हमारी तनख्वाह गवर्नमेंट देगी।

[illegible]ड्डूशा[illegible] —

'गवर्नमेंट' कौन होता है?

झड़ूशाह—

मगर फिर न कहना कि हम आपकी खिदमत करते रहे हैं।

गड्डूशाह—

मजाल है, मजाल है! तो अंदर चलें?

(गोपालदास चिक उठाता है।)

गोपालदास—

चलिए हुजूर तशरीफ ले चलिए।

गड्डूशाह—

(चौंककर) शरीफ़े? कहाँ हैं? (चारों तरफ देखता है।)

(गोपालदास दूसरी ओर मुँह करके हँसता है।)

चपरासी—

जनाब अंदर चले चलें। अब मुकदमा पेश होनेवाला ही है।

(दोनों अंदर जाकर कुरसियों पर बैठ जाते हैं।)

झड़ूशाह—

(गोपालदास से) तुम्हारा क्या नाम है?

गोपालदास—

हुजूर, गोपालदास।

झड़ूशाह—

थोड़ा सा पानी तो पिलाओ।

गोपालदास—

बहुत बेहतर, हुजूर। (पानी का ग्लास भर देता है।)

झड़ूशाह—

(गोपालदास से) मगर तुम हो कौन?

गोपालदास—

हुजूर, मिस्लख्वाँ।

गड्डूशाह—

(चौंककर) झड्डूशाह?

गड्डूशाह—

(सलाम की परवा न करके) झड्डूशाह !

झड्डूशाह—

हाँ भई गड्डूशाह !

गड्डूशाह—

इनमें 'बेकानूनी' किसने की है, और पकड़कर कौन लाया है ? एक का हाथ बँधा हुआ है और दूसरे की कमर।

झड्डूशाह—

(गहरे सोच में पड़कर) कुछ पता नहीं लगता। अजब मामला है। मसालख़ाँ जी !

गोपालदास—

जी हुज़ूर !

झड्डूशाह—

क्या बात है ? कुछ जानते हो ?

गोपालदास—

जी यह (सिपाही की ओर इशारा करके) इस (अभियुक्त की ओर इशारा करके) को पकड़ लाया है।

झड्डूशाह—

तो मामला क्या है ? इसने क्या कसूर किया है ?

सिपाही—

हुज़ूर, इसका दफ़ा चौंतीस में चालान हुआ है।

गड्डूशाह—

(जीभ बाहर निकालकर) तो यह चौंतीसवीं बार पकड़ा आया है। बड़ा बदमाश है।

झड्डूशाह—

(आश्चर्य से) चौंतीसवीं बार ! हे हे ! राम राम ! चौंतीसवीं बार ?

गोपालदास—

नहीं हुज़ूर, इसका यह मतलब नहीं।

गड्डूशाह—

अब सँभलकर रहना, कहीं तुम्हें भी यह चौंतीसवीं दफा (फा पर विशेष जोर देकर) लग जायगी।

झड्डूशाह —

हमें भी लग जायगी ? मगर हम तो डिप्टी हैं—डिप्टी।

गड्डूशाह—

(अभियुक्त से) तुमने यह जुर्म किया है ? सच-सच कह दो

अभियुक्त—

जी मैं इसे स्वीकार करता हूँ।

गोपालदास—

मानता है, हुजूर ! अपना जुर्म मानता है, सजा दीजिए।

झड्डूशाह—

(अभियुक्त से) तुम्हें ६ महीने की कैद।

झड्डूशाह—

और, तुम्हें (सिपाही से) सात महीने की।

सिपाही—

(घबराकर) हुजूर !

झड्डूशाह—

सिपाही जी ! जो कोई पेश हो, उसे सजा देनी पड़ती है। हम [illegible], मजबूर हैं, हम क्या करें? हम क्या कर सकते हैं। [illegible]? हम मजबूर हैं। हम मजबूर हैं। हम [illegible] हैं।

गोपालदास—

(धीरे से) हुजूर, सिपाही को, जो मुलजिम को पकड़कर लाता है, सजा नहीं दी जाती। और, यह जो आसामी को ६ महीने की [illegible] हुआ है, यह भी ज्यादा है। कोई हलकी-सी सजा दे दीजिए।

गड्डूशाह—

हलकी-सी ? याने थोड़ी-सी ! याने जुर्माना !

गोपालदास—

हाँ हुजूर ! जुर्माना।

(अभियुक्त चवन्नी उठाकर जेब में डाल लेता है, और दो दुअन्नियाँ मेज़ पर रख देता है। गड़ूशाह और झड़ूशाह तृषित नेत्रों से देख रहे हैं। सिपाही और अभियुक्त चले जाते हैं। गड़ूशाह एक दुअन्नी उठाकर देखता है, और फिर धोती में बाँध लेता है। दूसरी दुअन्नी उठाकर एक विशेष कटाक्ष से झड़ूशाह की ओर सरका देता है।)

गड़ूशाह—

झड़ूशाह! पहले देख लो, फिर न कहना कि खोटी दे दी।

झड़ूशाह—

(दुअन्नी को देखता है।) बिलकुल खरी है। (धोती में बाँधकर) मैं कोई ऐसा आदमी हूँ. (फिर कुरसी पर बैठकर) फिकर न करो, भरोसा रक्खो। मैं कोई ऐसा वैसा आदमी नहीं हूँ।

गोपालदास—

हुजूर!

गड़ूशाह—

अब तुम्हें क्या दें मशालची जी! दो दो आने ही तो हमें मिले हैं। मुश्किल से तेल का खर्च चलेगा।

झड़ूशाह—

बड़ी मुश्किल से। (एकाएक याद करके) पर तुमने तो कहा था कि तुम दोनों को कचहरी सरकार से तलब मिलेगी।

गड़ूशाह—

(उछलकर) और, अब दुअन्नी देखकर मुँह में पानी भर आया। ...ावा, नहीं, यह नहीं हो सकता। अगर तुमने ऐसी बात कही है, तो चले जाओ। मैं बाहर से मुकद्दमों का पकड़ लाऊँगा, झड़ूशाह फैसला कर ...गे। क्यों झड़ूशाह?

झड़ूशाह—

हमारा नया-नया काम है, आमदनी कुछ है नहीं। दस आने ही तो, [illegible] ...ार आने आये हैं। अब इसमें से तुम्हें क्या मिल सकता है? कचहरी ...ड़ से तलब लेना, कचहरी सरकार से।

गोपालदास—

हजूर मैं रुपये ने लिया नहीं मांगता।

झड़ूशाह—

(कुछ सोचकर) लिया नहीं, मांगते, बहुत अच्छा बात है। तो फिर क्या रहने दो, जल्दी करो।

गोपालदास—

यह जुर्माना सरकारी खजाने में दाखिल किया जायगा। इस पर आपका हक नहीं।

झड़ूशाह—

हमारा हक नहीं, तो क्या तुम्हारा हक है? झड़ूशाह, तुमने सुना, इस पर हमारा हक नहीं। वाह पटवारी साहब के मुनीम!

झड़ूशाह

रुपया एक-एक पैसा दे दो, तो हमारा हक हो जायगा। बड़ा लुच्चा आदमी है। हम इसे नौकर नहीं रखते। (गोपालदास से) चले जाओ।

गोपालदास—

जनाब हुजूर मैं

झड़ूशाह—

हम नहीं रखते। चलो, फैसला हुआ। कोई जबरजस्ती है। जो चाहा, सो लिया। जो चाहा, जवाब दे दिया। हम डिप्टी हैं। जानते हो, हम डिप्टी हैं। हम जो चाहे कर सकते हैं।

झड़ूशाह—

(मोटे का साफा ठीक करके) जाओ, चले जाओ। हम तुम्हें नौकर नहीं रखते।

(गोपालदास चुप हो जाता है, चपरासी अंदर आता है।)

चपरासी—

हुजूर! लाला रामदास नजारी आपसे मिलने आये हैं। आने दूँ या रोक दूँ?

झड़ूशाह—

आने दो!

झड्डूशाह—

हाँ भई गड्डूशाह!

गड्डूशाह—

आ जाय, तुम्हारी क्या सलाह है। फड़गी साहब खफा न हो जाएँ, यह सोच लो। फिर मुझे न कहना।

झड्डूशाह—

(गोपालदास से) क्यों मुनीमजी! कुछ हर्ज है?

गोपालदास—

नहीं हुजूर, बिलकुल नहीं। बड़ी खुशी से बुला लीजिए। कोई हर्ज नहीं। (चपरासी से) जाओ, बुला लाओ।

गड्डूशाह—

अब कोई और मुकद्दमा तो नहीं, जिसे जरीमाना करना हो?

गोपालदास—

नहीं, हुजूर, अब कोई नहीं।

(गोपालदास मुकदमे का फैसला लिखने लग जाता है और चपरासी के साथ रामदास भंडारी अंदर आता है।)

रामदास—

राम-राम डिप्टी साहब! राम राम!

गड्डूशाह—

राम-राम महाराज! राम राम!

झड्डूशाह—

राम राम शास्त्री जी! आइए, बैठिए!

(रामदास कुछ दूर पर खड़ा हो जाता है।)

गड्डूशाह—

इधर बैठिए, अपना घर है, खड़े क्यों हो?

झड्डूशाह—

बैठ जाइए, बैठ जाइए।

(रामदास बड़ी कठिनाई से कुरसी पर अकड़कर बैठ जाता है।)

झड़ूशाह—

(दुअन्नी वापस देकर) मगर गड्डूशाह ! इस तरह तो गुज़ारा न हो सकेगा ।

गड्डूशाह—

बिलकुल नहीं हो सकेगा ।

(रामदास चला जाता है । गोपालदास कागज़ पेश करता है ।)

गड्डूशाह—

क्या है, मसाल खाँ जी !

गोपालदास—

जनाब दस्तख़त कर दें । यह मुक़दमे का फ़ैसला है ।

गड्डूशाह—

मगर पैसे तो वापस कर दिये ?

गोपालदास—

पैसे वापस कर दिये ?

गड्डूशाह—

जिसने जरीमाना दिया था, वह तो अपनी [illegible] के [illegible] का लड़का निकल आया ।

झड़ूशाह—

अभी अभी जो आया था, वही था । दोनों से दुअन्नी दुअन्नी वापस ले गया ।

गोपालदास—

हुजूर, क़ानून में तो यह नहीं [illegible] ।

झड़ूशाह—

तो क़ानून में क्या होता है ?

गोपालदास—

[illegible]

[illegible]

[illegible]